ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-12 सितंबर-II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

25 अगस्त 'विश्वबंधुत्व' अविस्मरणीय दिन को जन मानस ने बनाया यादगार

धन्य है वो धरती और धन्य हैं वहाँ पर रहने वाले लोग जहाँ कुछ ऐसी आत्माएँ जन्म लेतीं और अपने कर्मों के आधार से कुछ ऐसा कर जातीं जिसे सारी दुनिया ताउम्र अपने जिह्वा पर उसका वर्णन कर उस कर्म को बार-बार सिर नवाते और जहाँ भी वे शब्द जाते लोग उन शब्दों से पुस्तकें लिख देते। आज कुछ ऐसा ही दृश्य हमनें देखा जिसमें विश्व माँ के रूप में प्रख्यात दादी प्रकाशमणि के कर्मों की गाथा क्या खूब गाई सबने, सभी के अंतरतम में यह बात झंकृत करती देखी गई कि मैं भी यदि दादी की तरह बनूं तो मेरा जीवन सफल हो जाये....।

शांतिवन। दुनिया में समझदार लोग उन्हें कहते हैं जो बड़ी-बड़ी बातें करने लग गए हैं, लेकिन यहाँ समझदार उसे कहा जाता जो छोटी-छोटी बातें समझने लगे। ऐसी ही दादी प्रकाशमणि भी थीं जिन्होंने सभी छोटे-बड़ों का दिल जीता और ऐसा जीता जो ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में जनमानस की भीड़ को देखकर ही अंदाज़ा लगाया जा सकता था। इस परिसर में सरसों के दाने बिखेरने की भी जगह नहीं थी, लोगों का प्यार व दादी जी के दुलार का ही असर है कि जन सैलाब उमड़कर उन्हें इतनी संख्या में श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा था। कोई गीत की मधुर ध्वनि से, कोई अपने अश्रु तथा कोई पुष्पों से दादी जी को अपनी भावना की माला पहना रहे थे।

सुबह से लगा ताँता

यहाँ ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से ही लोग दादी के स्मृति चिन्ह प्रकाश स्तंभ पर बैठकर उनकी उपस्थिति को महसूस करने लगे थे। इतना बड़ा परिसर जहाँ किसी भी स्थान पर बैठने की जगह न होने के बावजूद भी लोगों की भावना इस कदर थी कि जहाँ स्थान मिले वहीं खड़े होकर विश्व जगत माता को सच्ची श्रद्धांजलि दे रहे थे। परिसर का वातावरण विहंगम, दर्शनीय तथा आत्मा को मंत्रमुग्ध कर देने वाला लग रहा था।

वरिष्ठ दादियों व बड़े भाइयों ने दी श्रद्धांजलि

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने लगभग 8.30 बजे सर्वप्रथम प्रकाश स्तम्भ पर जाकर माल्यार्पण कर अपनी भावना व्यक्त की। अस्वस्थ होने के बावजूद भी दादी ने विश्वगुरु को जाकर नमन किया। तत्पश्चात् संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका तथा संयुक्त मुख्य प्रशासिका क्रमशः दादी गुल्ज़ार व दादी रतनमोहिनी ने अपनी भावना पुष्प अर्पण कर व्यक्त की। संस्था के प्रधान सचिव क्रमशः ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. बृजमोहन व ब्र.कु. रमेश ने भी दादी के सम्मान में अपनी भावना प्रकाश स्तम्भ पर जाकर व्यक्त की। इसके अलावा अन्य भाई-बहनों ने भी कतारबद्ध व करबद्ध होकर प्रकाश स्तम्भ पर संकल्पों को साकार करने का प्रण लिया। साथ ही साथ मधुर गीतों के द्वारा भी दादी को श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। सभी के दिल से एक ही आवाज़ निकली कि हम भी दादी जैसा विश्व बंधुत्व व वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को आत्मसात कर इस धरती पर दादी की परछाई बनकर दिखाएंगे। संध्या पर दादी जी के साथ के स्नेहातीत अनुभव वरिष्ठ बहनों तथा वरिष्ठ भाइयों तथा कुछ आगंतुक मेहमानों द्वारा दादी जी को शब्द सुमन अर्पित किए गए।

नई दिल्ली। भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द मोदी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.सरला तथा अन्य।

'सोच' का प्रभाव करता है स्वास्थ्य को प्रभावित

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन करते हुए बायें से ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिट्ठा, ब्र.कु. डॉ. अशोक मेहता, डॉ.शिवान के.कौल, ब्र.कु. डॉ. बनारसीलाल शाह तथा अन्य।

ज्ञानसरोवर। मुम्बई एम.जी.एम. हेल्थ युनिवर्सिटी के कुलपति डॉ.शिवान के.कौल ने कहा कि अधिकतर बीमारियां मन में उपजने वाले निगेटिव व अनावश्यक संकल्पों से उत्पन्न होती हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था के चिकित्सा प्रभाग द्वारा व्याधियों की रोकथाम के लिए राजयोग का जो प्रयोग किया जा रहा है वह मरीजों के लिए वरदान का कार्य कर रहा है। चिकित्सा जगत के वैज्ञानिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए जिस गति से दिनों-दिन नये आविष्कार की दौड़ में हैं उससे भी अधिक गति से उग्र रूप ले रही व्याधियों पर लगाम कसने को चिकित्सकों के लिए चुनौती का विषय माना गया है। वे ब्रह्माकुमारी संस्था के मेडिकल विंग द्वारा 'माइण्ड-बॉडी-मेडिसिन' विषय पर आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे।

वर्धा दात्तम मेघ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के -शेष पेज 5 पर

शांतिवन। दादी हृदयमोहिनी, दादी जानकी,दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु.मोहिनी,ब्र.कु. मुन्नी ,ब्र.कु.सरला दीदी तथा वरिष्ठ भाई बहनें।